Gyanvividha, Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025 : PP-139-142

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 139-142
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

1. ममता कुमारी
एम. ए., नेट,
शोधार्थी-हिंदी, बी. आ. ए. बिहार
विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. सुरेन्द्र प्रसाद
प्रभारी प्रचार्य, एमजेके कॉलेज, बेतिया.

Corresponding Author :

ममता कुमारी
एम. ए., नेट,
शोधार्थी-हिंदी, बी. आ. ए. बिहार
विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

कहानीकार मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग ने समकालीन हिंदी कथा साहित्य को एक नई अर्थवत्ता दी है। उनके सात उपन्यास, ग्यारह कहानी संग्रह,चार नाटक प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने यात्रा संस्मरण भी लिखे हैं और स्तंभ लेखन भी किया है। 2022 ई. में उनकी संपूर्ण कहानियाँ राजकमल प्रकाशन से एक ही जिल्द में प्रकाशित हुई है। इस संग्रह में कुल 87 कहानियाँ है, जिनका रचना काल 1972 ई. से 2019 ई. तक फैला हुआ है। अपने संबंध में उन्होंने स्वयं कहा है- "मेरा सफर तो कहानी के साथ है। जब कहानी खत्म होगी सफर भी खत्म हो जाएगा। पर मैं कुछ वक्त बचा रखूंगी। कहानी खत्म करके तुमसे अलग हो सड़क के दूसरी छोर पर चली जाऊँगी। तुम्हारे सफर को नजर नहीं लगेगी। मैं कुछ दूर चलकर तुम्हारी आंखों से ओझल हो जाऊंगी। अपना सफर अकेले तय करूंगी। तुम्हें खबर न होगी। डरना मत, तुम मेरे सफर के साथी जरूर बनोगे, पर मंजिल के मुंतज़िर नहीं"[1]।

लेखन के संबंध में उनकी दृष्टि एकदम साफ है। वे स्वयं लिखती हैं- "लिखने के दौरान मेरी समझ में आ गया कि साहित्य केवल लेखक नहीं लिखता, दो परतों पर साँस लेता समय भी लिखता है। एक वह जिसमें लेखक खुद जीता है और एक वह जिसमें वह अपने किरदारों को जिलाता है। यूँ कि उपन्यास एक तरह कथ्य को, लेखक की निजी जीवन दृष्टि से आप्लावित करके, अनन्यता देता है तो दूसरी तरफ लेखक की निजी जीवन दृष्टि, जाने-अनजाने, ऐतिहासिक स्मृति और समष्टि की अनुभूति से समृद्ध होकर सार्वभौमिक या औपन्यासिक बनती है। लेखक की भाषा भी, लाख निजी होते हुए, खुद चुनी हुई नहीं होती। उसे किरदार चुनते हैं; वह वक्त चुनता है, जिसमें वे जीते हैं। एक ही लेखक के लिखे उपन्यासों की भाषा एकदम अलग हो सकती है। जैसे मेरे 'कठगुलाब',

'चितकोबरा', 'अनित्य', 'मिलजुल मन' आदि की है।

जहाँ तक प्रतिबद्धता का सवाल है प्रतिबद्ध मैं हूँ। पर मेरी प्रतिबद्धता उस विश्व-दृष्टि से है, जो ईमानदार अनुभूति से उपजी है और सबसे न्याय की माँग करती है। बाकी सभी वाद-प्रतिवाद जब-जब लेखन पर हावी होने के हुए, खुद डोलायमान नजर आये; कभी इस रुख तो कभी उस रुख। जब जीवन की जटिलता समझी, विडंबना झेली, विरोधाभास परखा, तभी कथानक में अनुभूति के साथ वैज्ञानिक या दार्शनिक दृष्टि का समावेश हो पाया और तभी रचना का साजो सामान बना"[2]।

मृदुला गर्ग ने हिंदी कहानी को ताजगी दी है। उनकी कहानियों की मूल विशेषता यह है कि उसमें कहीं दुहराव नहीं है। उनकी पहली कहानी 1972 ई. में 'रुकावट' शीर्षक से सारिका में प्रकाशित हुई। इस कहानी की शुरुआत में ही नारी मनोविज्ञान की झलक मिलती है। कहानी का प्रारंभ इस रूप में होता है- "और कितनी स्त्रियों से प्रेम रचा चुके हो?" रीता ने अपना सर और आराम से उसके कंधे पर टिकाते हुए अलसाए स्वर में पूछा।

"क्यों, क्या करोगी जानकर?" मदन ने एक बार आँखें खोल कर दोबारा बंद करते हुए कहा। "यों ही।" "सोच रहा हूँ, क्या कहूँ?" "जो कुछ कहो, सच कहो और सच के अलावा कुछ नहीं कहो"।

"सबसे पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि तुम्हारे जितना प्यार मैंने किसी से नहीं किया"।

"चिकनी-चुपड़ी छोड़ो और मतलब की बात कहो"।

"तुम्हारे सिवा तीन और एक कुल चार"।

"हूँ....?"[3]

इस छोटी कहानी में प्रेम का एक नया सौंदर्य शास्त्र है। इसी वर्ष प्रकाशित 'हरी बिन्दी' कहानी में इस कहानी का अंत कहानी की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करता है- "उसने देखा, कॉफ़ी खत्म हो चली है और बैरा बिल लिए आ रहा है। बाहर वर्षा थमने लगी है, धुँध भी छँट रही है। नहीं, धुंआधार नहीं बरसेगा। वह संकेत झूठा निकला। अब धुँध हट जाएगी और वही तेज प्रकाश वाला सूर्य निकल आएगा। बिल आने पर उसने उठा लिया, कहा "न्योता मेरा था"। अतिथि ने बहस नहीं की। शुक्र है, उसने सोचा, पैसे देने की जिद करने लगता तो सब कुछ बिखर जाता। टैक्सी लेकर चले थी कि घर आ गया। उतरते-उतरते पैसे निकालने लगी तो उसने रोक दिया, 'रहने दीजिए"।

"क्यों?" उसके माथे पर शिकन पड़ गई।

"आज का दिन मेरे लिए काफी कीमती रहा है।"

"कैसे?"

"मैंने आज से पहले किसी को हरी बिन्दी लगाए नहीं देखा।" उसने स्निग्ध स्वर में कहा।

वह जरा ठिठकी कि टैक्सी चल दी। कुछ दूर जाकर आंखों से ओझल हो गई"[4]।

'कितनी कैदें' 1972 ई. की लंबी कहानी है। इस कहानी ने स्त्री-विमर्श को एक नई भंगिमा दी है। कहानी का अंत द्रष्टव्य है- "बांध से बाहर आने पर मनोज और मीणा ने समझा, क्या कुछ हो गुजरा था। लगा, विनाश चंडी ने अपने पैरों के नीचे मसलकर तमाम शहर को चकनाचूर कर दिया था। छोटी सी जगह थी कोयला बाँध से ताल्लुक रखने वाली कुछ एक पक्की इमारते ही उसे नगर का रूप देती थी। अब वे तहस-नहस हो चुकी थी। बचा था सिर्फ मलबा। सामने छोटी सी पहाड़ी पर वह गेस्ट हाउस था, जिसमें वह भूचाल आने से पहले रहे थे। अब वहाँ रहने लायक कुछ नहीं था। छतें जमीन चूम रही थी। खिड़कियों और दरवाजों के चौखटे, शीशे के टुकड़े और लोहे की तुड़ी-मुड़ी छड़ें गड्डमड्ड नीचे खड्ड में पड़ी थीं। ऊँची-नीची, उबड़-खाबड़ खड़ी कुछ दीवारों के बीच, जहाँ-तहाँ एकाध खिड़की बूढ़े के मुँह में दांत के समान हिल रही थी। कुदालें थामे मजदूर खुदाई में लगे थे। पास ही एम्बुलेंस खड़ी थी, इस मलबे के नीचे माल-असबाब

ही नहीं, मृत और जीवित घायल शरीर भी दबे हैं। एक धक्के के साथ मीणा ने समझा और यह भी कि अब वह बिल्कुल आजाद है, कैद से ही नहीं, माल-असबाब से, पुराने साजोसामान से। पुरानी स्मृतियों से हो सके तो नई जिंदगी शुरु कर सकती है। एकदम नई जिंदगी।

उसने कसकर मनोज का हाथ थाम लिया। भावावेश में काँपते हुए स्वर में कहा, "लगता है, लिफ्ट ही कि नहीं, जिंदगी की कैद से निकल आई हूँ।" और मनोज सोच रहा था, यहाँ तक तो ठीक है, पर अब सवाल मौत नहीं, जिंदगी का है। क्या मैं इसकी पिछली जिंदगी के शिकंजों से बरी रह सकूँगा? इस औरत के साथ जी सकूँगा?"[5]

यह कहानी एक नई शुरुआत के संकल्प को व्यंजित करती है। 'डैफोडिल जल रहे हैं' उनकी अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है। प्रकृति के जीवन और जीवन की प्रकृति का इसमें यथार्थ चित्रण हुआ है। कहानी की शुरुआत इस तरह होती है- "मैंने पहले-पहल डैफोडिल वहीं देखा, गुलमर्ग में। पीले रंग का बड़ा सा फूल। चार पंखुड़ियाँ और बीच में एक कटोरा सा। सब पिला। मुझे पीला रंग पसंद नहीं है। मतलब, डैफोडिल देखने से पहले नहीं था। पर डैफोडिल देखकर लगा, कोई हर्ज नहीं है। चलेगा, पीला रंग भी चलेगा।

वैसे मुझे डैफोडिल देखने गुलमर्ग जाने या कश्मीर की यात्रा करने का खास शौक नहीं था। बल्कि मैं वहाँ के बारे में सुन-सुनकर और पढ़-पढ़कर तंग आ चुकी थी। लगता था जिसके पास भी थोड़ा सा पैसा है, वह शादी करने की फौरन बाद कश्मीर भाग जाता है और वहाँ से लौटकर उसी बहिश्त का नाम देता है। जैसे नई शादी हुए हर जोड़े के लिए वक्ती बहिश्त का होना जरूरी शर्त हो। अंग्रेजी में इस वक्ती बहिश्त को हनीमून कहते हैं। डैफोडिल की तरह हिंदुस्तान में आमतौर पर हनीमून भी नहीं मिलता। अच्छा है, बहुत से लोग एक भुलावे से बचे रहते हैं। वरना वह वक्ती बहिश्त जमीन पर जहन्नुम के एहसास को कुछ और तीखा बना डालता है। मुझे भुलावों का शौक नहीं है। मुझे बहिश्त का शौक नहीं है। मुझे कश्मीर जाने का शौक नहीं था। मुझे गुलमर्ग देखने का शौक नहीं था"[6]।

कहानी की नायिका और सुधाकर दोनों सहपाठी हैं। सुधाकर की नौकरी लग जाने पर दोनों शादी कर लेते हैं। दोनों हनीमून पर जाते हैं। वहाँ जिना और फिरोज से उसकी मुलाकात होती है। उन दोनों में आत्मीयता हो जाती है। परिभ्रमण के क्रम में जिना गहरी खाई में गिर जाती है और उसकी मौत हो जाती है। जिना के चरित्र को कहानीकार ने गहरी संवेदना से निर्मित किया है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में चरित्र शिल्प का वैशिष्ट्य मिलता है। 'स्थगित कल' में प्रवीण और विपिन के चरित्र को अत्यंत स्वाभाविकता के साथ निर्मित किया गया है। इस लंबी कहानी में कथा विन्यास अत्यंत सटीक है। कहानी के अंत में चरित्र की गहरी संवेदना इस प्रकार व्यंजित होती है- "मेरी बीबी, मेरे बच्चे", विपिन चीख रहा है, "प्रवीण, इनका क्या होगा?" मुझे उबरने का रास्ता मिल गया।

मैंने अपना चेहरा उसके चहरे से सता लिया। अपने होंठ उसके कान पर रख दिए। "तू फिक्र मत कर। मैं देखूँगा इन्हें," मैंने कहा। "पर तू तो खुद मर रहा है," वह जोर से चीखा। "नहीं" मैं कह उठा, 'मैं देखूंगा इन्हें। सब इंतजाम करूँगा इनके लिए।" विपिन जड़ पड़ा है। जैसे मेरी बात उस तक पहुँच न रही हो। आसपास रोने का शोर बढ़ रहा है। उसकी बीबी-बच्चे यहीं हैं। दहाड़ मारकर रो रहे हैं। क्या मुझे रोने का अधिकार नहीं?" विपिन की आँखों में नफरत लहरा रही है। नहीं, ऐसा क्यों सोचा मैंने? नफरत नहीं, यह मौत की छाया है। उड़ान भरते कलहंस की फरफराती परछाई।

नहीं विपिन, मैं मरूँगा नहीं। तेरे बीबी-बच्चों को देखूंगा। इस बार बेइमानी नहीं करूँगा। मेरा अपराधबोध जरा कम नहीं होगा। एक सजायाफ्ता कैदी की तरह जिऊँगा मैं। तू मर गया और मैं जिंदा हूँ, हत्या के महापातक से यह कम तो नहीं"[7]।

मृदुला जी अपनी गंभीर रचना धर्मिता से साहित्यिक कृतियों में सामाजिक-यर्थाथ, स्त्री चेतना एवं मानवीय मूल्यों को गहनता से चित्रित करती हैं। इतना ही नहीं युगीन जीवन के विभिन्न प्रसंगों तथा स्थितियों को अपनी शैली में व्यक्त करने की सामर्थ्य भी रखती हैं। वे अपनी कथाओं में सजीवता, वास्तविकता एवं यथार्थता लाने के लिए घटनाओं एवं परिस्थितियों का प्रसंगानुकूल वातावरण भी सृजित करती हैं। उनकी कहानी 'कितनी कैदे', 'अवकाश' आदि में देखने को मिलती है। 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'स्थगित कल' कहानी में मृत्युबोध का चित्रण है। मृदुला की कथादृष्टि विविधता और विषयों की नवीनता के कारण काफी चर्चित रही है। 'चितकोबरा', 'उसके हिस्से की धूप', 'मिलजुल मन' आदि उनका प्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें स्त्री-पुरुष के संबंधों की स्वतंत्रता को दिखाया गया है। मृदुला जी अपने रचना संसार में समाज की समस्त समस्याओं को सँवारकर पाठकों के बीच रखती हैं, जो उन्हें एक नई दिशा देती है। जो उनके कथा साहित्य की बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ-सूची :

1. मृदुला गर्ग संचयिता, संपादक- छबिल कुमार मेहेर, नई किताब प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2019 ई., पुरोवाक्, पृष्ठ-7.
2. उपरिवत्, पृष्ठ-28-29.
3. संपूर्ण कहानियाँ, संपादक - मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण – 2022.
4. उपरिवत्, पृष्ठ-19.
5. उपरिवत्, पृष्ठ-33-34.
6. उपरिवत्, पृष्ठ-113-114.
7. उपरिवत्, पृष्ठ-173.

•